International Journal of Home Science 2020; 6(2): 232-234

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(2): 232-234
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 03-03-2020
Accepted: 04-04-2020

संगीता कुमारी
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
संगीता कुमारी
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

वैश्वीकरण में गृहव्यवस्था का बदलता स्वरूप एवं परिवार एक अध्ययन (छपरा नगर के संदर्भ में)

संगीता कुमारी

सारांश
पारिवारिक संघर्ष एक भावनात्मक तथा सामाजिक घटनाओं का परिदृश्य ही है। परिवारिक संघर्ष में पति–पत्नी, बच्चों आदि सदस्यों के बीच चलता रहता है, इस प्रकार के परिवार में शनैः शनैः परिवार समाप्त हो जाता है। प्रायः देखा जाता है कि इस तरह के पश्चिमी दायरे में हिंसा होना भी स्वाभाविक है। इस प्रकार की परिस्थितियों के कारण आपस में बँटवारा की नौबत खड़े कर देते है। संयुक्त परिवार के विघटनो का एक मात्र कारण था पारिवारिक कलह। प्रतिदिन यहाँ पर वैचारिक भिन्नता अर्थ की असामयिक व्यवस्था के कारण तलाक बढ़ रहे हैं नगर अध्ययन से ज्ञात हो रहा है कि 9.1 प्रतिशत एकाकी परिवार संघर्ष के दायरे में केन्द्रित है। सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना नौकरी करती महिलाओं के साथ यहाँ पर है। इनके समक्ष बच्चों के पालने की समस्या आदि भयंकर रूप में पाया जाता है।

भूमिका
सृष्टि के प्रारम्भ से ही गृहविज्ञान के तत्त्व विद्यमान थे। परन्तु इस तत्वों का ज्ञान विशेष ज्ञान से ही प्राप्त हुआ। जब ज्ञानी मानव का उदय हुआ केवल चालीस हजार वर्ष पूर्व हमारी वर्तमान मानव जातियों में ज्ञानी मानव का जन्म हुआ। यह गृहविज्ञान के उद्भव एवं विकास की कहानी को बया करती है। शिक्षा के क्षेत्र में गृहविज्ञान का प्रादुर्भाव वर्तमान शताब्दी की देन है। वैसे तो 1780 ई0 में अमेरिकी वैज्ञानिक काउन्ट रम्फोर्ड थामसन ने रसोइ घर में विज्ञान की सहायता से कार्य सरलीकरण के कई प्रयोग किये गये है परंतु क्रमबद्ध रूप से इस विषय को पढ़ाये जाने की आवश्यकता पर सर्वप्रथम अमेरिकी वैज्ञानिक ई0 बीवर सदी के पूर्वाद्ध में हुआ। सभ्यता के उषाकाल से आदमी ने रोटी कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष करता आ रहा है। वस्तुतः में आग, चाक, धातु, मुद्रा आदि सभ्यता मूलक तत्वों के जन्म एवं विकास का इतिहास ही मानव सभ्यता का इतिहास है। गृहविज्ञान का उद्भव एवं विकास का इतिहास है। वस्तुतः सभ्यता के क्रमिक विकास से गृहविज्ञान का शाश्वत संबंध रहा होगा। यों कहे भारत में गृहविज्ञान का दर्शन यथार्थ में गृहविज्ञान और परिवार का वास्तविक, प्रायोगकि दर्शन ही है। पारिवारिक आवश्यकताओं ने मानव को गृह जैसी आधारीय, सामाजिक संस्था को जन्म दियां इसी संस्था में उसे स्नेह, सहानुभूति, विनम्रता, त्याग और साहस आदि सर्वोत्तम मानवीय गुणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। यही संस्था उनके भाग्य निर्माण में सर्वाधिक प्रभावपूर्ण भूमिका अदा करती है। संपूर्ण गृह–प्रबन्धन वस्तुतः दर्शन पर आधारित है जिससे भारतीय इतिहास में गृहविज्ञान की श्रेष्ठता प्रमाणित होती जा रही है।

पूर्व पाषाण युग में मानव की आवश्यकता भी बढ़ती चली गयी तथा सभ्यता मूलक वस्तुओं का अविष्कार होने लगा। आग के उत्पति के साथ ही गहविज्ञान के विकास की नींव पड़ी। आग के अविष्कार से मानव सभ्यता के विकास का पथ प्रसस्त हुआ। इस समय कोई सामाजिक संगठन नहीं था। आदिम समाज को मातृसत्तात्मक समाज भी कहते है। आदि मानव का सौंदर्य प्रेम कला, मूर्तिकला तक सीमित नहीं था वे हाथै दांत, पत्थर, शिपियों आदि से आभूषण तैयार करते थे। प्राचीन काल की अवधारणाओं का गृहविज्ञान की अवधारणा बहुत की महत्वूपर्ण है क्योंकि गृहविज्ञान पुरानी मान्यताओं की दृष्टि पर आधारित है और केन्द्रित भी है। इस विज्ञान की पृष्ठ भूमि जितना पौराणिक है, आज के युग में भी प्रासंगिक है। पूर्व के दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि पहले सभी कार्य समय व्यवस्थापन की श्रृंखलाओं से बंधे थे। इसका आधारित सिद्धांत और दृष्टिकोण भी नयापन की नयी श्रृंखलाओं को जन्म दिया। फिर भी आधारभूत ढांचा गृहविज्ञान का आधुनिक प्रतिरूप भी भूतकाल जैसा ही प्रतीत होता है।

प्राचीन मान्यता और विकास की गति भी आज वहीं है, पर बदला–बदला सा नजर आ रहा है लोगों की मानसिकता भी आयात किया हुआ है जो मूल रूप से संस्कृति की देन है। गृहविज्ञान के नाम की सार्थकता और विषय की गहनता का अध्ययन यहाँ शामिल किया जा रहा है। अध्ययन बनाने के आकलन के दृष्टिकोण में सुधार होना आवश्यक है।

एलमर ने अपनी पुस्तक समाज में शास्त्रीय अनुसंधान की परिकल्पना में भी समाज शास्त्रीय परिवार ''अंग्रेजी शब्द'' फैमिली लैटिन भाषा के फेमुलस जिसका अर्थ निकलता हैं यह समूह के रूप मजिसमें माता–पिता, बच्चे नौकर आदि आते है। वस्तुतः गृहव्यवस्था का आधार परिवार से संबंधित है इसलिए परिवार की कुशलता ओर समय व्यवस्थापन की परिधियों में केंद्रित होता है। वस्तुतः परिवार नही होता तो गृहव्यवस्था ही नहीं होती। अतः परिवारिक श्रृंखलाओं के आधारभूत सिद्धांत पर ही गृहव्यवस्था निर्धारित होता है।

वस्तुतः परिवार के संगठनात्मक ढाचा के आधार पर ही गृहव्यवस्था कायम हो पायी है।ऐतिहासिक आधार पर भी परिवार के प्रकार एवं दृष्टिकोण में बदलाव आया। आदिम परिवार में पितृत्व के बारे में अज्ञान, नातेदारी संबंधों का प्रभुत्व वर्तमान के समान शिक्षा का अभाव था। ईसा के 1,000 वर्ष पूर्व से 3,000 वर्ष पूर्व तक परिवार की श्रेणी में केन्द्रित था। वस्तुतः इन परिवारों में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। संपत्ति पर महिलाओं की अधिकार की मान्यता थी एवं उत्तराधिकार के रूप में मान्यता व्याप्त थी। मध्यकाल में इसाई, चर्च, रोम चर्च बन गया था इस समय के परिवारों में विवाह संस्कार भी बन गया था एवं तलाक नियम विरूद्ध हो गया था। पितृसत्ता को प्रोत्साहित किया जाने लगा। उस समय की गृहव्यवस्था, समय व्यवस्थापन पर आधारित था।

इसी प्रकार आधुनिक परिवारों की दृष्टि हमारे संगठन में आया। वस्तुतः औधोगिकरण, नगरीकरण, संदेशवाहन, यातायात वाहन की प्रधानता बन गयी। धीरे–धीरे परिवार श्रृंखलाओं का विमुखीकरण प्रारम्भ हो गया। इसी समय परिवार की आधुनिक दृष्टि का मूल्यांकन शुरू हो गया। परिवार में बच्चों का पालन पोषण सदस्यों की माँग तथा पारिवारिक दृष्टि एवं समय व्यवस्थापन पर केन्द्रित होता गया।

तत्पश्चात् अध्ययन की श्रृंखलाओं में पश्चिमी संस्कृति के परिवार पूर्वी संस्कृति के परिवारों की दृष्टि भी सामने आयीं। धर्म के आधार पर परिवार की श्रृंखलाओं का आधार बना। यह आधार भी गृहव्यवस्था और समय व्यवस्थापन की श्रृंखलाओं पर ही आधारित होता था। हिन्दु परिवार, मुस्लिम परिवार ईसाइ परिवार आदि परिवारों के संस्कार और गृहव्यवस्थापन का आयाम का संस्कार पर ही निर्भर करता है।

वेस्टर की ''न्यू वर्ल्ड डिक्सनरी'' के अनुसार परिवार बदलते परिणामों का आधार मानता है। वैदिक परम्पराओं को गृहविज्ञान के आयामों का स्पष्ट रूप यहाँ पाते है। इसी प्रतिरूपों में बदलते परिवार और गृहव्यवस्था के प्रारूप को भी पाते है। यहीं पर गृह व्यवस्था के प्राचीन एवं आधुनिक रूप का समन्वय गृहव्यवस्था सह समय व्यवस्था के श्रृंखलाओं का जन्म होता है।

महिलाओं की आर्थिक भूमिका में काफी परिवर्तन हो रहा हैं अब गृहकार्य के अतिरिक्त आय उपार्जन की मुड बन गयी है। महिलाओं की पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता कम हो गयी है और इनकी आर्थिक स्वतंत्रता भी बढ़ती जा रही है। यही आर्थिक आधार परिवार की व्यवस्था का आधार है।

यह भी स्पष्ट होता है कि शहर में धरेलू कार्य बहुत हल्के फुल्के हो गये है। अब महिलाओं को फुर्सत का अधिक समय भी मिलने लगा है। साथ ही संतानों की संख्या भी कम होती जा रही है। गृहिणी के कार्यों का विकेन्द्रीकरण भी शुरू हो गया है। पति और पत्नी का सह–सम्बन्ध भी बनता जा रहा है तथा तलाक की संख्याओं का आधार भी बढ़ता जा रहा है। गृहव्यस्थापन और गृहव्यवस्था की दूरियों के स्थालाकृतियों का अन्तर भी स्पष्ट होता जा रहा है। इस प्रकार गृहव्यवस्था धर्म पर भी आधारित हो मान्यताएँ प्राप्त करने लगा। क्योंकि नारी धर्म में परिवार और परिवार के कुशलता के प्रति महिलायें आस्थावान होती है।

वैदिक साहित्य में महिलाओं के आय स्त्रोत का वर्णन भी मिलता है। उस समय आय की स्थितियों का आकलन किया जाता रहा हैं भूमि आय संसाधन का श्रोत माना जाता रहा है। भूमि के उत्पादित वस्तुओं का वितरण इसी आय में सम्मिलित था। महिलाएँ गृहव्यवस्था के अंतर्गत समय श्रृंखलाओं और भार्यादा में बंधी थी। आय के श्रोतों का आधार यहाँ पर उच्च कोटि, मध्यकोटि, निम्नकोटि का आधार भी माना जाता रहा है।

उच्चकोटि की महिलाओं की केशसिखा महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधनों का ख्याल रखती थी। तरह–तरह का लेप बनाकर महिलायें धन प्राप्त करती थी। प्रायः उस समय उच्चकोटि में यह सीमित था। कालान्तर वर्णव्यवस्था आय को प्रभावित किया पर आय उस समय समाजवादी दृष्टिकोण में बदल गया।

निम्न कोटि की महिलाएं अपने गृहव्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए, साथ ही परिवार के स्तर को सुधारने के लिए दूसरे जगहों पर कार्य करने लगी जो आय श्रोत का आधार तो था ही इन महिलाओं का सामाजीकरण भी होता रहा। ये महिलाएँ शिक्षित भी होती थी। कुटीर उद्योगों के वितरण और प्रभाव भी महिलाओं को धनव्यवस्थापन, समय व्यवस्थापन की विधियों को भलि–भाँति समझा। तद्अनुसार कार्य सिद्धि के लिए ये महिलाये घर–घर जाती थी और नयी कलाओं को सीखकर धन उपार्जन करती थी।

पर्दा प्रथा इनके आय को प्रभावित किया फिर भी सर्वोच्च आय का श्रोत महिलाएं ही थी। धरेलु कार्यों के लिए इनहें पारिश्रमिक भी मिलता रहा।

सामन्ती वर्ग जहाँ धन की कमी नही थी। महिलाएँ मनोरंजन तथा अन्य उपकरणों के सहारे विनोद भी करती थीं साथ–साथ विनोद कराने वाली महिलाओं को अर्थ पुरस्कार भी देती थी। यह सिलसिला आज भी जारी है। अधिकांश व्यक्ति यह विश्वास करते हैं कि प्रबन्धमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य और कठिन कार्य सही समय पर सही निर्णय लेना होता है। अधिकांश गृह प्रबन्ध में विचार के संदर्भ में यह मानते हैं कि वास्तविक प्रबंधकीय निर्णय सचेत स्तर पर लिये जाते है। समय व्यवस्थापन गृह–प्रबन्ध दोनो का समन्वय गृह कार्यों को परिलक्षित करता है।

1959 ई0 में वाशिंगटन में गृहअर्थशास्त्र हेतु नवीन दिशाएँ नामक निर्देशिका में गृहअर्थशास्त्रियों में कुछ अधिकार बताएँ गये है जिन्हें विकसित करने की आवश्यकता हैं गृह अर्थशास्त्र, गृहव्यवस्था एवं समय व्यवस्थापन प्रवत्तियों का अंतर संबंध बनता जा रहा है जो स्थायी रूप से केन्द्रित होता है।

यह भी माना जा रहा है कि व्यवस्था सार्वभौमिक है। प्रत्येक धरों में यह संघम्न की जाती है। वैदिक साहित्य में समय व्यवस्थापन कार्य रूप में जरूर था पर व्यवस्थित नही था। गृहव्यवस्था के भिन्न आयामों को गृहिणी ही करती थी। यह दृष्टि बहुयामी आधारों पर ही विकसित था। वस्तुतः समय व्यवस्थापन प्राचीन व्यवस्था में उदय लिया जब मुनष्य के पास घड़ी नही थी उस समय भी ऊँचाई और नदी, झील की छालया में सूर्य की किरणों का व्यापक प्रभाव ही दिखाई पड़ता था। इसे ही समय व्यवस्थापन का आधार माना जाता था। उस समय अल्प मात्रा में आवश्यकता की पूर्ति होती थी। दिन–रात के अंतराल में कार्य की अवधि बनती और बिगड़ती थी। परिवार को सीमित साधनों के लिए संघर्ष करना पड़ता था। प्राचीन गृहव्यवस्था में पारिवारिक श्रृंखलाओं का उद्भव संयुक्त परिवार के रूप में था। प्राचीन व्यवस्था में कार्यों का बंटवारा भी सीमिति थी। कार्यों का मूल्यांकन सदस्यों द्वारा होता था।

नये संसाधनों और पुराने संसाधनों के अंतराल में गृहव्यवस्था और समय व्यवस्थापन में सरलीकरण का उदगम हुआ। कार्य सरलीकरण के प्रारूप से इनका आंतरिक सह संबंध स्थापित किया गया। सरलीकरण के विकास एवं गृहव्यवस्था एवं समय व्यवस्थापन के प्रारूप का अध्ययन भी अनिवार्य है। समय व्यस्थापन की क्रियाएँ एक तरफ महिलाओं को शांति प्रदान करती थी तो दूसरी तरफ ये महिलायें किंगकर्त्तव्य विमूढ़ भी होती गई। कार्य की सक्रियता का प्रभाव ऊर्जा एवं शक्ति के कारण होता हैं पर इससे अधिक प्रभाव महिलाओं के कार्य क्षमता को प्रभावित करता है। महिलाओं की सरलीकरण की विशेषता बौद्धिक

साहित्य में अंकित है। प्राचीन परम्परा में पर्व–त्योहार, भोजन (पोषण), पोषण का स्तर बाल क्रियाएँ आदि क्रियाओं का शाश्वत रूप भी पाते है।

प्राचीन में समय व्यवस्थापन का आधार सूर्य की रोशनी और दोपहर के मध्य भाग में केन्द्रित सूर्य के आधार पर किया जाता था। इसी के सहारे कार्य को संपादित करते थे। इस प्रकार की स्थितियों का आकलन समय व्यवस्थापन से निर्धारित हुआ और कालान्तर में समय व्यवस्थापन का प्रारूप बदलता चला गया। यही समय व्यवस्थापन आधारों पर एवं संसाधनों पर केन्द्रित होता गया। भूतकाल अनुभव का प्रभाव समय व्यवस्थापन की क्रिया और प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है। किसी प्रकार की बुढ़ी महिलायें गृहव्यवस्था, समय व्यवस्थापन की धूरी होती है। वे अपने अनुभव से आने वाली पीढ़ी को प्रोत्साहित और अनुभव प्राप्त करती थी वरना समान परिस्थितियों में प्रबन्ध के गृहव्यवस्था के अनुभव का मूल्यांकन भी कराती हैं अनुभव के एकीकरणों को गृहव्यवस्था का सार माना जाता है। भूतकाल के समायानुसार अपने परिवार की संकल्पनाओं का आधार मानती हैं। अनुभव भूतकाल के परिणाम और दुष्परिणामों की व्याख्या का आधार होता है। वर्तमान परिस्थितियों के साथ–साथ भविष्य की कल्पनाओं का आधार समय व्यवस्थापन और गृहव्यवस्था का आधार भी बनाया जाता है।

वैदिक साहित्य के पूर्वानुमान से ज्ञात होता है कि वाद–विवाद, तर्क और अब के कुंठास्थित भावनाओं को जन्म देती हैं इसका आधार भी गृहणियों को सुयोग्य तर्क आदि का आभास कराया जाता था। निर्णय प्रकिर पा प्राचीन साहित्य से ही पाते है।

समय व्यवस्था के मूल सिद्धांत का अध्ययन पूर्व के ऐतिहासिक साहित्य से भी प्राप्त करते है। गृहस्वामी गृहिणी की भी योजना का प्रारूप मौसम के अनुसार योजना का प्रतिरूप व्यवहार करते रहे है। ये गृहणियाँ कार्य का बंटवारा करती थी। संयुक्त परिवार में गृहव्यवस्था और समय व्यवस्थापन की श्रृखलाएँ थी यह भी स्पष्ट था कि संयुक्त प्रथा में कुछ सदस्य निकम्मे और आलसी भी थे। गृहस्वामी और गृहिणी समय अनुसूचित की धारणाओं से परिचित थी जिसे व्यवहारों, विवाह शादी में कार्य योजनाओं और समस्या व्यवस्थापन के कड़ियों

में जोड़ती रहती थी। उस समय धन व्यवस्थापन की धारणाओं को समय से जोड़ा गया। इस प्रकार सभी प्रकार की निम्न धारणाओं को गृहस्वामी और गृहणी मिलकर दिशा तय करती थी। कार्यों का बंटावारा भी समयके अनुसूचि रूप में ही था।

महिलाएं अपने कार्यों को रूचिकर बनाने के लिए लोकगीत के माध्यम से किसी कार्य को सरल और मधुर भी बनाती थी। यह भी स्पष्ट है कि जल संसाधनों के लिए महिलाएँ तालाब, पोखर, कुआँ आदि का सहारा लेती थी और समूह जन कार्यों का सम्पादन भी करती थी। गृहकार्य को सम्पादित करने के लिए समय सारिणी का उपयोग भी करती रही है। आटा पीसना, केश श्रृंगार, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री, पोषण सम्बन्धी ज्ञान, शिशुपालन एवं महिलाओं का विशिष्ट शिल्प, संगीत और खेलों के माध्यम से होता था।

प्राचीन काल की महिलायें चारावाह योजनाएँ भी बनाती रही है। आज की परिस्थितियों का आकलन करते है तो महिलायें कार्य के बोझ से तनाव में होती है। तरह–तरह की बीमारियों का शिकार भी हो जाती है लेकिन पूर्व के व्यवस्था में बीमारियों पर काबू पाने के लिए घरेलू इलाज भी संभव था। बहुत हद तक परिस्थितियों की अनुकूलता भी थी। गृहव्यवस्थापन पर्यावरण और परिस्थिति के अनुसार होता था। यह भी स्पष्ट है कि लंबी होने वाली रातों में ये महिलायें एकांकी, नाटक एवं कहानियों का लाभ प्राप्त करती थी। इस प्रकार अशिक्षित महिलाओं को अनौपचारिक शिक्षा मिल जाती थी। तरह–तरह के शिल्प दस्तकारी कार्य भी करते रहे है जिसके लिए इन्हे पारिश्रमिक भी प्राप्त होता था, जो किसी भी कार्यस्थलों की परिभाषा एवं आधार पर केन्द्रित नहीं किया जाता था। बरन विकास की दशाओं पर ही निर्भर करता था। यह विकास कालान्तर हक था परंतु पूर्वानुमान ही क्रियाशीलता प्रदान करता था।

गृह–प्रबन्ध प्राचीन व्यवस्था का आज भी शाश्वत रूप यहाँ केन्द्रित है। इस प्रकार जन आकांक्षाओं की आधार शिलाएँ दोनो रूपों में पाया जाता रहा है। शनैः शनैः विकास की गतिविधियों को नयी प्रणाली और उसके कार्यस्थलों के रूप की विभाजन भी होना अनिवार्य है। इस प्रकार संपूर्ण विकास के उपायों का आधार मानती थी। जीवन चक्र के काल में गृहिणी का लगने वाला समय बहाव निम्न चित्र में दर्शाया गया है यह मुख्य बात ध्यान रखने की है। समय की दैनिक पूर्ति की सीमा 24 घण्टे ही होती है। मानक समय भी गृहव्यवस्था का अहम् रूप था जिसे आज भी स्वीकार करते है। इस प्रकार गृहणियाँ अपने–अपने परिवार और सदस्यों के बीच कार्य सिद्ध भी करती रही है। गृहिणियों के अनुभव पर आधारित कार्य किये जाते रहे है। जैसे–जैसे गृहिणियों में अनुभव का विकास हुआ इनकी कार्यशैली और कार्यप्रणाली बदलती रही है। इस प्रकार संपूर्ण कार्य की स्थितियों पर एक नजर रखने की आवश्यकता भी पड़ती है। कभी–कभी स्थितियों का आकलन व्यवहाँ रिकता के आधार पर भी निर्भर करता है। ठीक इसी समय समयव्यवस्थापन का आधार बना होगा इसलिए स्पष्ट कहा गया है कि गृहव्यवस्था अनुभव के आधार पर भी केन्द्रित और विकेन्द्रित होता जा रहा है। कार्य करने की कलाएँ और अनुभव भी समन्वय स्थापन को निर्धारित करता है। इस प्रकार परिस्थितियों पर बदलता स्वरूप भी नजर आता है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण की सीमाएँ असीमित होती जा रही है क्योंकि व्यवस्था एवं व्यवस्थापन का प्रारूप बदलता जा रहा है इस प्रकार कार्य का सरलीकरण भी वैश्वीकरण की सीमाएँ निर्धारित करता है। इस प्रकार कार्यों के प्रारूपों में निम्न प्रकार की वृत्तियाँ केन्द्र प्रसारी प्रारूपों में विकसित होता है। कार्यो की शतिशीलता भी वैश्वीकरण की वृत्तियों एवं लक्ष्यों पर प्रभाव है यही कारण है कि आज के वैश्वीकरण की दौड़ में कार्यो की महिलाओं का महाजाल बनता जा रहा है। भिन्न–भिन्न प्रकार की वृतियाँ एवं अभिवृत्तियाँ व्यक्ति विशेष को प्रभावित करती है। यह प्रारूपों में नही पाया जाता है। वस्तुतः वैश्वीकरण में नाकारात्म सोच विकसित होता जा रहा है। इसके पीछे कारण है कि भौतिकतवादी चिन्तन कार्यो का केन्द्र प्रसारी प्रारूपों में बदलता है।

संदर्भ सूची

1. यादव, सूर्यभान – ''भारतीय समाज : संरचना और परिवर्तन'' वंदना पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2012, 102.
2. बॉटमोर टीबी. ''समाजशास्त्र'', सरस्वती कामप्लेक्स, दिल्ली, 2004, 32.
3. सिंगर मिल्टन – ''स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज इन इण्डिया सोसायटी'' चिकागों एल्डाइन पब्लिकेशन, 196, 92.
4. टायलर, एटवर्ड–''भारतीय समाजःएक परिचय'' यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर, 2008, 19.
5. डा. कर्वे इरावती – ''किनशिप आर्गोनाइजेशन इन इण्डिया'' पुने डिकॉन कॉलेज मोनोग्राफ, 1953, 64.
6. शाह, एएम. –''भारतीय सामाजिक व्यवस्था'' साहित्य केन्द्र प्रकाशन, दिल्ली, 2009, 61.
7. मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाऐं – डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन – राजकुमारी शर्मा, डॉ वंदना सक्सेना एवं डॉ. ए. बरोलिया